Prof. Khushbu Kumari
Guest Teacher
Dept. of Political science
V. S. J. College, Rajnagar, Madhubani, lnmu

Class - B.A-3(H)
Paper - VII

Page No
Date

Topic - अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन का व्यवहारवादी दृष्टिकोण तथा निर्णय - निर्माण दृष्टिकोण

व्यवहारवादी दृष्टिकोण की मान्यता है कि किसी देश की नीति को समझने के लिए वहाँ की जनता और नेताओं के व्यवहार को समझना चाहिए। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में व्यवहारवादी दृष्टिकोण का प्रयोग न्यूमैन, लासवेल, आमण्ड आदि विद्वानों ने किया है।

किर्क पैट्रिक के अनुसार व्यवहारवाद चार तत्वों का मिश्रण है —

(1). विश्लेषण की इकाई के रूप में संस्थाओं की अपेक्षा व्यक्ति तथा समूह के आचरण का अध्ययन।

(2) सामाजिक विज्ञानों की एकता पर बल तथा अन्तः अनुशासनात्मक अध्ययन पर बल

(3) तथ्यों के पर्यवेक्षण हेतु सांख्यिकीय तथा परिमाणात्मक तकनीकों पर बल

(4) अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को एक व्यवस्थित आनुभविक सिद्धान्त के रूप में परिभाषित करना। व्यवहारवाद के अध्ययन की इकाई मानव का ऐसा व्यवहार है जिसका प्रत्येक व्यक्ति द्वारा पर्यवेक्षण, मापन और सत्यापन किया जा सकता है।

इस पद्धति का विकास तीव्र गति से हो रहा है और आज यह प्रवृत्ति प्रबल होती जा रही है कि किसी राष्ट्र की नीति को समझने के लिए वहाँ की जनता तथा नेताओं की भावनाओं, इच्छाओं, प्रवृत्तियों तथा तरीकों का पता लगाकर उनके व्यवहार को समझा

Scanned with CamScanner

जावे।

निर्णय – निर्माण दृष्टिकोण :–

इस सिद्धान्त को नीति-निर्धारणपरक सिद्धान्त भी कहते हैं, इसके प्रमुख समर्थक स्निडर, कोहान, बर्टनस्पेन, रॉबिन्सन, स्प्राउट तथा लासवेल आदि हैं।

यह सिद्धान्त इस बात पर बल देता है कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में यह समझा जाना चाहिए कि कोई राष्ट्र क्यों और कैसे व्यवहार करता है? इसे निर्णय लेने के स्थान, प्रक्रिया, परिस्थितियों, वातावरण तथा प्रेरक देखने चाहिए और उनका सही विश्लेषण करना चाहिए। निर्णय लेने वाले व्यक्ति के व्यक्तित्व तथा बाह्य वातावरण के तत्वों को भी देखना चाहिए।

आर. सी. स्नाइडर ने निर्णय-निर्माण दृष्टिकोण में निम्नलिखित तत्वों को शामिल किया है –

(1) निर्णय-निर्माण का केन्द्र वे कार्यकर्ता हैं जिन्हें निर्णय-निर्माण करने के लिए कहा जाता है।

(2) निर्णय-निर्माण करने वालों के व्यवहार का अध्ययन कार्य-विश्लेषण के रूप में माना जाता है।

(3) निर्णय-निर्माण करने वाले कार्यकर्ताओं के राज्य के आन्तरिक और बाहरी वातावरण का अध्ययन करना होगा।

Scanned with CamScanner

(4) निर्णय लेते समय की परिस्थितियों का अध्ययन करना।

(5) निर्णय - प्रक्रिया के तीन तत्व बताये हैं—

(i) सुयोग्यता का क्षेत्र - निर्णय - निर्माण। करने वालों की क्षमता जो कि इकाई के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए आवश्यक होती है।

(ii) संचार तथा सूचना - निर्णय - निर्माण के समय उपलब्ध स्रोत अर्थ, मूल्य तथा प्राथमिकताएँ।

(iii) प्रेरणा - कार्य कर्ताओं को प्रभावित करने वाले मनोवैज्ञानिक, व्यक्तित्व तथा मूल्य तत्व जो प्रक्रिया में सम्मिलित होकर इसके परिणामों को प्रभावित करते हैं।

Khushbu Kumari
28th Aug. 2020

Scanned with CamScanner